12. निक्की, रोजी और रानी

• महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रूखाबाद में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा इंदौर में हुई। प्रयाग के क्रास्थवेट कॉलेज में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, हिंदी और संस्कृत में स्नातकोत्तर किया। ये महिला विद्यापीठ, प्रयाग की प्रधानाध्यापिका भी रहीं। इनकी रचनाओं में पाठक के हृदय को भाव–विभोर करने की अद्भुत क्षमता आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली यह लेखिका छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री हैं। रश्मि, नीहार, नीरजा, दीपशिखा, यामा, सांध्यगीत इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। इनके द्वारा गद्य साहित्य में निबंध, संस्मरण व रेखाचित्र की भी रचना की गई है। इनका गद्य साहित्य भावपूर्ण व रोचक है। 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'अतीत के चलचित्र' व 'मेरा परिवार' इनके प्रमुख संस्मरणात्मक गद्य संकलन हैं। 'पथ के साथी' में इन्होंने अपने सम्पर्क में आए महान साहित्यकारों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखे हैं। 'मेरा परिवार' में इन्होंने अपने जीवन से संबंधित उन जीव–जंतुओं का वर्णन किया है जिन्हें इन्होंने अपने जीवन में पाला था। गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में प्रतिभाशाली महादेवी वर्मा का निधन सन् 1987 में हुआ।

पाठ परिचय

प्रस्तुत रचना में लेखिका ने अपने जीवन में आए, ऐसे तीन जीवों का वर्णन किया है, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी, उनके हृदय पर गहरी छाप छोड़ने में समर्थ रहे हैं। इस रचना में उनका पशु–प्रेम भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

पशु प्रेम का इतना सटीक एवम् सरस वर्णन अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। नकुल शिशु के प्रति सहानुभूति उनकी मानवता को दर्शाती है। साँप–नेवले की लड़ाई का भी मनोरंजक वर्णन है। पशु होते हुए भी निक्की, रोजी और रानी में घनिष्ठ मित्रता का भाव मैत्री की शिक्षा देता है। अपने पालतू पशुओं–जीवों के साथ घटी घटनाओं के माध्यम से, इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि पशु भी अत्यन्त समझदार होते हैं और विपत्ति में अपनों का साथ देते हैं। बाल्य काल में बच्चों को पशु-पक्षियों के बारे में जानने की अभिरुचि होती है, किन्तु धीरे–धीरे वह अधिकांश लोगों में विलुप्त हो जाती है। यह अध्याय हमें जीवों से प्रेम करने की भावना पैदा करता है और उनके संरक्षण के प्रति जागृति उत्पन्न करता है।

मूल पाठ

बाल्यकाल की स्मृतियों में अनुभूति की वैसी ही स्थिति रहती है, जैसी भीगे वस्त्र में जल की। वह प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता किन्तु वस्त्र के शीतल स्पर्श में उसकी उपस्थिति व्यक्त होती रहती है। इन स्मृतियों में और भी विचित्रता है। समय के माप से वे जितनी दूर होती जाती हैं, आत्मीयता के परिमाण में उतनी ही निकट आती जाती हैं।

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण महत्त्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छपे से हैं। निक्की नेवला, रोजी कुत्ती और रानी घोड़ी।

रोजी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह मेरे पाँचवें जन्म दिन पर, पिताजी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप भेंट कर दी गई। स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते। रोजी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेल–कूद में साथ देती। वस्तुतः मेरे पशु–प्रेम का आरम्भ रोजी के साहचर्य से माना जा सकता है, जो तेरह वर्ष की लम्बी अवधि तक अविच्छिन्न रहा।

रोजी सफेद थी, किंतु उसके छोटे–सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्यभाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण उसमें कत्थई किनारी वाली सफेद साड़ी की शबल रंगीनी का आभास मिलता है। वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुत्ती थी, और कुछ प्रकृति से और कुछ हमारे साहचर्य से श्वान–दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था। हम सबने तो उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे।

उस समय पिताजी इंदौर के डेली कॉलेज (जो राजकुमारों का विद्यालय था) के वाइस प्रिंसिपल थे और हम सब छावनी में रहते थे, जहाँ दूर तक कोई बस्ती नहीं थी। हमें पढ़ाने वाले शिक्षक प्रातः और संध्या समय आते थे। इस प्रकार दोपहर का समय हमारे लिए अवकाश का समय था, जिसे हम अति व्यस्तता में बिताते थे।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था, परन्तु मैं, मुझसे छोटी बहिन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसले तोड़ते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियाँ बीनते घूमते रहते। ग्रीष्म में जब हवा ठहर–सी जाती थी, वर्षा से जब वातावरण गलकर बरसने सा लगता था, और शीत में जब समय जम–सा जाता था, हमारी व्यस्तता एक सी क्रियाशील रहती थी।

घूमते–घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्ष से घिरा सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में 8–9 फुट और खुली धूप में 4–5 फुट के लगभग गहरा था। कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लम्बी–नीची और सूखे पोखर पर झूलती सी थी। सूखी पत्तियों ने झड़–झड़ कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था। हम तीनों डाल पर बैठकर झूलते रहते या रॉबिंसन क्रूसो के समान अपने समतल समुद्र के गहरे टापू की सीमाएँ नापते रहते। घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली–फली मिल जाती तो, नंदन वन की प्रतीति होने लगती।

हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती। जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती। जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे–आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती। गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी–बड़ी अँबिया हवा के झोंके से नीचे गिरती रहती

और उनके गिरने के स्वर के साथ रोजी सूखे पोखर में कूदती और पत्तियों के सरसराहट से भरे समुद्र में से उसे खोज लाती। कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता, परंतु वह इस खोज–कार्य से विरत न होती।

दोपहर को पिताजी कॉलेज में रहते और माँ घर के कार्य में व छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त रहती। रामा बाजार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज–माँज कर बर्तन चमकाने में दत्तचित्ता रहती। वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़ लिख रहे हैं। पर हम कुछ ऊँची खिड़की की राह से पहले रोजी को उतार देते और फिर एक–एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते–छिपते अपने उसी सूने मुक्ति लोक में पहुँच जाते। तीन में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था, क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था। परिणामतः तीनों का जाना अनिवार्य था। रोजी भी हमारे निर्बन्ध सम्प्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी, अतः वह भी साथ आती थी। हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दी जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती। कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था, पर वह चीं करना भी नियम–विरुद्ध मानती थी।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल–झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे, तब एक आम गिरने का शब्द हुआ। रोजी नीचे कूदी। कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही, फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह से किसी जीव को दबाये हुए ऊपर ला रही है। वस्तुतः उस सूखे पोखर के नीचे कगार में बिल बनाकर किसी नकुल दम्पत्ति ने प्रजापति के कार्य में सक्रिय सहयोग देना आरम्भ किया था। उनकी नकुल सृष्टि का कोई लघु, परंतु हमारे ही समान अराजकतावादी सदस्य, अपने सृजनकर्ताओं की दृष्टि बचाकर सूखी पत्तियों के समुद्र में ऊपर तैर आया था। पत्तियों से छोटा मुँह निकालकर उसने जैसे ही बाहर के संसार पर विस्मित दृष्टि डाली, वैसे ही अपने–आपको रोजी के छोटे और अंधेरे मुख–विवर में पाया। निरन्तर बिना दाँत चुभाये कच्ची अंबिया लाते–लाते रोजी इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई।

आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था, पर आकृति में स्पष्ट अन्तर था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म–नर्म पंजे, गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्हीं सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना सा जान पड़ा। रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था, परंतु बचने के संघर्ष में उसके कुछ खरोंच लग ही गई थी। चोट के अधिक भय से वह निश्चेष्ट था। उसे पा कर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि अपने घोंसले, चिकने पत्थर, जंगली कनेर के फूल आदि का विचित्र संग्रहालय छोड़ कर उसे लिए हुए घर की ओर भागे। उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए, परन्तु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला। उन्होंने जीव–जन्तुओं को न सताने के सम्बंध में लम्बा उपदेश देने के उपरांत, उसे उसके नकुल माता–पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया।

हमें बेचारे नकुल शिशु से बड़ी सहानुभूति हुई। छोटे से बिल में रात–दिन पड़े माता–पिता के सामने बैठे रहने में जो कष्ट बच्चे को हो सकता है, उसका हम अनुमान कर सकते थे। यदि एक छोटे कमरे में हमें सामने बैठाकर बाबूजी रात–दिन पढ़ाते रहें और माँ सिलाई–बुनाई में लगी रहें, तो हमारा क्या हाल होगा। ऐसी ही कोई अप्रिय स्थिति बिल में रही होगी, नहीं तो यह इतना छोटा बच्चा भागता ही क्यों? अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता–पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे।

अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा। प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बाक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया। फिर बहुत अनुनय–विनय कर और उसके सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया। इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघूत्तम सदस्य सम्मिलित हुआ।

जब रामा की सतर्क देख–रेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया, तब हम रामा को दिए वचन भूलकर, फिर पूर्ववत् अराजकतावादी बन गए।

माँ ने उसका नाम रखा नकुल, जो उसकी जाति वाचक संज्ञा का तत्सम रूप था, किन्तु न जाने संक्षिप्तीकरण की किसी प्रवृत्ति के कारण हम उसे निक्की पुकारने लगे।

पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है। गिलहरी के खाने योग्य कीट, पतंग, फल–फूल आदि कोई भी खाद्य खाकर वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है। जेब में, कन्धे पर, आस्तीन में, बालों में, जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जावे, वह शांत स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थिति देखता–परखता रहता था।

निक्की मेरे पास ही रहता था।

उस समय हमारे परिवार में छोटी लड़कियों की वेशभूषा में गोटे–पट्टे से सजा गरारा, कुर्ता और दुपट्टा विशेष महत्त्व रखता था, जिसमें मध्यकालीन बेगमों के लघु संस्करण जान पड़ती थी। कभी–कभी प्रगतिशीलता का प्रमाण देने के लिए उन्हें फ्रॉक भी पहनाए जाते थे, जिसे कॉलर, लेस, झालर आदि के घटाटोप में वे क्वीन विक्टोरिया की संगनियों का भ्रम उत्पन्न करके मानो दोनों का प्रतिनिधित्व करती थीं। हमारे जूते तक पूर्व–पश्चिम में विभाजित थे। पूर्व के वेश के साथ छोटी, हल्की और जरी के काम वाली जूतियाँ पहनकर हम घिसटते हुए चलते और पश्चिमीय वेश के साथ घुटने के ऊपर तक काले या सफेद मोजे चढ़ाकर ऊँची एड़ी वाले और तस्मे से कसे बंधे जूते पहनकर डगमगाते हुए चलते थे। हमारे मन और पैर दोनों ही संचरण पद्धति से विद्रोह करते थे, क्योंकि वह न हमें करौंदे की झाड़ियाँ लांघने देती और न दौड़ने। अतः हम आल्मारी में दोनों प्रकार के पदत्राण को छिपाकर खिड़की से कूदते और नंगे पैर कंकड़–पत्थरों पर दौड़ लगाते थे।

निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ झूलता रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिप कर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता। रोजी

का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था, परन्तु निक्की की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता। एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे, वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लम्बे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया। हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की दो पिछले पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है।

निक्की ने साँप को मार डाला, समझकर हम सब चीखने पुकारने और साँप को पत्थर मारने लगे। यदि हमारा कोलाहल सुनकर रामा न आ जाता, तो परिणाम कुछ दुखद भी हो सकता था। उस दिन प्रथम बार में ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लम्बे साँप से लड़ सकता है। उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी। निक्की साँप के सब ओर इतनी तेजी से घूम रहा था कि वह एक भूरे और घूमते हुए धब्बे की तरह लग रहा था। साँप फन पटक रहा था, फुफकार रहा था, उसे अपनी कुण्डली में लपेट लेने के लिए आगे–पीछे हट–बढ़ रहा था। परन्तु बिजली की तरह तड़प उठने वाले निक्की को पकड़ने में असमर्थ था। वह तेजी से उछल–उछल कर साँप के फन के नीचे पैने दाँतों से आघात कर रहा था।

रामा के कारण इस समय युद्ध का अन्त देखने के लिए तो हम बाहर खड़े न रह सके, परन्तु जब निक्की खिड़की पर आकर बैठा, तब हमने झाँककर साँप को कई खंडों में कटा देखा। निक्की के मुँह में विष न लगा हो, इस भय से रामा ने उसके मुँह को पानी में डुबा–डुबा कर धोया और फिर दूध दिया।

साँप जैसे विषधर को खण्ड–खण्ड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है। जीव–जगत में जो निर्विष है, वह विष से मर जाता है और जिसमें अधिक मारक विष है, वह कम मारक वाले को परास्त कर देता है। पर नेवला इसका अपवाद है। वह विषरहित होने पर भी न सर्प के विष से मरता है और न संघर्ष में विषधर से परास्त होता है। नेवला सर्प की तुलना में बहुत कोमल और हल्का है। यदि साँप चाहे तो उसे अपनी कुण्डली में लपेटकर चूर–चूर कर डाले। फण के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे, परन्तु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली और गति से परास्त हो जाता है। नेवला न उसे दंशन का अवसर देता है, न व्यूह रचना का अवकाश। और अपनी लाघवता के कारण नेवले को न विशेष अवसर चाहिए न सुयोग।

इसी बीच में बाबूजी ने मुझे शहर के मिशन स्कूल में भर्ती करने का निश्चय किया। इस योजना से तो हमारा समस्त कार्यक्रम ध्वस्त होने की सम्भावना थी, अतः हम सब अत्यंत दुखी और चिंतित हुए, परंतु विवशता थी।

अंत में एक दिन पुस्तकें लेकर और शिकरम (बन्द गाड़ी जो उन दिनों नागरिक प्रतिष्ठा की सूचक थी) में बैठकर मुझे जाना पड़ा।

निक्की सदा के समान मेरे साथ था, परंतु बाबूजी के आदेश से उसे घर पर छोड़ देना आवश्यक हो गया। मिशन स्कूल पहुँचकर देखा कि वह शिकरम की छत पर बैठकर वहाँ पहुँच गया है। फिर तो उसे कपड़ों में छिपाकर भीतर ले जाने में मुझे सफलता मिल गई। परंतु कक्षा में

उसे मेरे पास देखकर जो कोहराम मचा, उसने मुझे स्तम्भित और अवाक् कर दिया। She has brought a reptile throw it away आदि कहकर सिस्टर्स तथा सहपाठिनियाँ चिल्लाने–पुकारने लगीं, तब reptile का अर्थ न जानने पर भी मैंने समझ लिया कि वह निक्की के लिए अपमानजनक सम्बोधन है। मैंने कुछ अप्रसन्न मुद्रा में बार–बार कहा कि यह मेरा निक्की है, किसी को काटता नहीं, परंतु कोई उसके साथ बैठने को राजी नहीं हुआ। निरूपाय मैंने उसे फाटक के चहार दीवारी तक फैली लता में बैठा तो दिया, परंतु उसके खो जाने की शंका से मेरा मन पढ़ाई लिखाई से विरक्त ही रहा।

आने के समय जब निक्की कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठा तब आनन्द के मारे मेरे आँसू आ गए। तब से नित्य यही क्रम चलने लगा। प्रतिदिन मुझे पहुँचाने और लेने रामा आता था और वह पालक के नाते निक्की के प्रति बहुत सदय था; अतः मार्ग में निक्की मेरी गोद में बैठकर आता था और मिशन के फाटक की लता में या बाग में घूम–घूमकर मेरी पढ़ाई के घंटे बिताता था। छुट्टी होने पर मेरे फाटक पर पहुँचते ही उसका कूदकर मेरे कंधे पर बैठ जाना इतना नियमित और निश्चित था कि उसमें कुछ मिनटों का हेर–फेर भी कभी नहीं हुआ।

मिशन का वातावरण मेरे लिए घर के वातावरण से भिन्न था। वहँ की वेशभूषा भिन्न थी, प्रार्थना भिन्न थी, चित्र, मूर्ति आदि भिन्न थे, ईश्वर नाम भी भिन्न था, और उन सबसे बड़ी भिन्नता यह थी कि निक्की का वहाँ प्रवेश निषिद्ध था।

इसके उपरांत हमारे परिवार में एक सबसे बड़ा जीव सम्मिलित हुआ।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टुओं या सफेद गधों (जिनकी जाति के सम्बंध में रामा ने हमारा ज्ञान वर्धन किया था) में घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमोरेंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है, तो हमें भी यह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा, सफेद टट्टू पर बैठोगे ? 'तुम कहो' – 'तुम कहो' के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गम्भीर मुद्रा में उत्तर दिया, ''सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।''

पता नहीं, हमारे ज्ञान के अजस्त्र स्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परन्तु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा सा चाकलेट रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अतः बाहर से टट्टू को लाने, ले जाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया। अब तो हम उस छोटे

टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे साथ हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ, न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने–फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था। और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित न हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है, हम सब चार–पाँच दिन उससे रूष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त कर ही ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू की माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख–दुख की गाथा सुनते–सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताज–महल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह यहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में बसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग, जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छ, बड़ी, काली स्वच्छ और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथुने जिन्हें फुला–फुलाकर वह चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठों वाला लम्बा मुँह, जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत–विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक थी। सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती–गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परन्तु इतने दीर्घ काल के उपरान्त भी स्मृति पट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती हैं, जैसे किसी अदृश्य स्याही में लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार–बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अतः अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बांधने के लिए तो बना नहीं था, अतः उसकी दीवार में एक खुली अल्मारी और कई आले–ताख थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल–झूलकर, उसके कान और अयाल में फल खोंस–खोंस कर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला–खिला कर, थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री स्थापित कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुन्दर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरे वाली ऐसी जीन बनवाई गई, जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी–बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सवेरे भाई–बहिन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ वह कार्यक्रम दोहराया जाता।

परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोह प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी। अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सबके सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर, उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी–बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा देने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर, सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु–पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूंछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी। और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हैं।

रानी हम सबकी शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठने वालों को वह दुल्कीचाल से इधर–उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी। परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परन्तु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दुखद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़ बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़न खटोले पर सँभाला। परन्तु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई, जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो। साथियों की चीख–पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछौने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चाताप भरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए। एक बार भाई के जन्म दिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा या आभूषण पहन कर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुन्दर छोटे–छोटे शेर मुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया। और न जाने किस प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछताछ की तब खोज आरम्भ हुई। पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कोने को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अन्त में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने छुट्टन को कोने की मिट्टी हटाने का आदेश दिया किसी ने कुछ गहरा गड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दण्ड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

फिर अचानक हमारे अराचक राज्य पर क्रान्ति का बवंडर बह गया और हमें समझदारों के देश में निर्वासित होना पड़ा। अवकाश के दिनों में जब हम घर लौटे, तब निक्की मर चुका था। रानी और उसका बच्चा पवन किसी को दे दिए गए थे। केवल दुर्बल, अकेली और खोई–सी रोजी हमारे पैरों से लिपट कर कू–कू करके रोने लगी।

शब्दार्थ

अतीत–बीता हुआ/ अनुभूत–अनुभव होने की दशा, भाव या गुण, संवेदन, बोध/अविच्छिन्न–सतत, निरन्तर/ आत्मीयता–मित्रता, अपना खास रिश्ता/ आरूढ़ –चढ़ने वाला, चढ़ा हुआ/ आहत–चोट खाया हुआ/ उत्कोच–घूस, रिश्वत/ उपहार –भेंट/ दत्तचित्त–जिसका चित्त किसी ओर लगा हो/ पदत्राण–पैरों की रक्षा करने वाला जूता/ मनोयोग–चित्तवृत्ति का निरोध करके और किसी एक विषय पर लगाना/ लघूत्तम–सबसे छोटा/ वात्सल्य–माता–पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम/ विवर–खोह, गुहा, बिल/ विस्मित–आश्चर्यजनक/ सतर्क–सावधान, तर्क युक्त/ समष्टि–सामूहिकता/ स्मृतियाँ–चादें/ सहानुभूति–किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुखी होना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'निक्की, रोजी और रानी' पाठ किस पुस्तक से लिया गया है –
   (क) 'पीड़ा' से (ख) 'आँसू' से
   (ग) 'माधुर्य' से (घ) 'मेरा परिवार' से ( )
2. 'निक्की, रोजी और रानी' क्रमशः थे –
   (क) नेवला, कुत्ता, साँप (ख) कुत्ता, घोड़ा, नेवला
   (ग) नेवला, कुत्ता, घोड़ा (घ) साँप, नेवला, कुत्ता ( )

   उत्तरमाला–(1) घ (2) ग

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'रोजी' किस प्रजाति की कुतिया थी ?
2. लेखिका को 'नकुल शिशु' कहाँ मिला था ?
3. रामा 'नकुल शिशु' को दूध किससे पिलाता था ?
4. रानी की देखभाल के लिए किसे रखा गया ?
5. रानी के रहने का स्थान क्या था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'निक्की और साँप' की लड़ाई का सजीव चित्रण कीजिए।
2. रोजी की सुंदरता का वर्णन कीजिए।
3. निक्की के कारण मिशन स्कूल में क्या घटना घटी ?
4. रामा ने टट्टुओं के संबंध में क्या कहानी बताई ?
5. मिशन स्कूल के वातावरण का चित्रण कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. 'निक्की, रोजी और रानी' रचना के आधार पर महादेवी वर्मा के पशु प्रेम का वर्णन कीजिए।
2. रानी के आकार–प्रकार का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

•••

यह भी जानें

अनुनासिकता चिह्न (चंद्रबिंदु ँ)

(क) हिंदी के शब्दों में उचित ढंग से चंद्रबिंदु का प्रयोग अनिवार्य होगा।

(ख) अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनिगुण है। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह और नाक से हवा निकलती है। जैसे – आँ, ऊँ, एँ, माँ, हूँ, आएँ।

(ग) चंद्रबिंदु के प्रयोग के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है। जैसे – हंस : हँस, अंगना–अँगना, स्वांग (स्व+अंग)–स्वाँग आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

(घ) जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो तो चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु का (अनुस्वार चिह्न का) प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के प्रयोग की छूट रहेगी। जैसे – नहीं, मैं, में आदि।

•••